अथ कात्यायनी शान्तिः

भाषा टीका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ श्री गजाधिपतये नमः॥

अथ कात्यायनी शान्तिः

भाषा टीका सहित

प्रतिज्ञा संकल्प, गणपति पूजन, आशीर्वाद,
वास्तु पूजन एवं व्रत कथा सहित

सम्पादन
श्री पं० शिवस्वरूपजी

मूल्य 30/-

प्रकाशक :
बी.एस. प्रमिन्दर
दिल्ली-५१

मुख्य वितरक :
कर्मसिंह अमर सिंह पुस्तक विक्रेता
बड़ा बाजार, हरिद्वार-२४९४०१

प्रकाशक:

बी.एस. प्रमिन्दर

मुख्य विक्रेता:

कर्मसिंह अमरसिंह,

पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार,

हरिद्वार (उत्तरांचल)

☎-01334-225619

नवीन संस्करण 2008

सम्पादक:

पं० शिवस्वरूप यज्ञिक

॥अथ कात्यायनी शान्तिः॥

॥श्री गणेशाय नमः॥

व्रत, उपनयन, चूड़ा कर्म विवाह आदि संस्कार तथा व्रत उद्यापन में देवपूजन एवं शान्ति आदि कर्मों में पूजन के निमित्त तिलक मण्डल अर्थात् ग्रह मण्डल बनावे ग्रह स्थापन करे।

रेत की सवा हाथ प्रमाण लम्बी तथा उतनी चौड़ी एवं चार अंगुल प्रमाण ऊंची वेदी की रचना करे और उसकी दक्षिण की ओर हवन की वेदी बनावे जिस पर सप्त कोण लिखकर अग्नि स्थापन करे। नवग्रह वेदी के ईशान कोण में एक गोल सी वेदी पर अष्ठ दल कमल की रचना करे। उस पर कलश स्थापित करे। नवग्रह की वेदी पर मध्य में गोलाकार सिन्दूर वर्ण अष्टदल द्वारा सूर्य स्थापित करे। आग्नेय दिशा में श्वेत वर्ण अर्ध गोलाकार चन्द्रमा बनावे, उसके दक्षिण में रक्तवर्ण त्रिकोणाकार मंगल बनावे, ईशान कोण में श्वेतवर्ण धनुषाकार बुध की रचना करे। उत्तर दिशा में पीतरंग कमलाकार वृहस्पति बनावे। पूर्व में श्वेत रंग चतुष्कोणाकार शुक्र स्थापित करे। पश्चिम में काला वर्ण मनुष्याकार शनि एवं नैऋत्य में धूम्र वर्ण मछली के आकार में राहु और वायव्य में धूम्र वर्ण खड्गकार केतु को स्थापित करे।

अथ कात्यायनी शान्ति सामग्री

श्रीफल, नारियल, गोरसर्षप, मौली, रोली, पंचरंग, आटा, चावल 2 सेर, गुड़ 1 पाव, केशर, पुष्प, पुष्पमाला, मोदक, धूप, दीप, ताम्बूल सुपारियां 10, बताशे, घृतपक्व, मिष्ठान्न, दालें, घृत, अर्धप्रस्थ, तेल, कुशा, स्रुवदूर्वा, कलश 2, यवतिल, हवन सामग्री, गोमय, रेती, समित्रापलाश, स्वर्णमूर्ति, स्त्रियों के वस्त्र, धोती, उपरना, लाल वस्त्र 1, गज श्वेतवस्त्र 1, गज पूर्णपात्र, लोटा 1, कटोरियां 2, पायस (खीर), अपूप (पूए), दक्षिणाद्रव्य आदि-आदि।

अथ पूजन विधि

नित्यकृत्य एवं शुद्ध स्नानादि यजमान पूजन की सामग्री- रोली, मोली (कलावा) जल, अक्षत, (चावल) गन्ध, पुष्प, पान, सुपारी, धूप, दीप, नैवेद्य तथा दक्षिणा आदि सब लेकर पूर्व की ओर मुख करके उत्तम आसन पर बैठे और आचार्य उत्तर की ओर बैठें। फिर आचार्य पूजन के लिये यजमान के शरीर पर तथा पूजन सामग्री पर अपने दक्षिण हाथ से जल लेकर शुद्धता के लिये छिड़के और यह मंत्र भी पढ़े।

ओं अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वाः य: स्मरेत्पुराडरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचि। पुराडरीकाक्षः पुनातु माम्।

इसके पश्चात् आचार्य-यजमान द्वारा पृथ्वी पर जल के छींटे दिलवाये और यह मन्त्र पढ़े।

ओं पृथ्वी त्वया धृता लोक। देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

इसके अनन्तर आचार्य गुरुदेव को अक्षत्, पुष्प, दक्षिण द्वारा प्रणाम करवे, मन्त्र पढ़ेः-

ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः॥
गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णुः गुरुर्देव महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म तस्मैश्री गुरवे नमः॥

तदनन्तर सबके हाथ में अक्षत् देकर आचार्य स्वस्ति वाचन करावे। मंत्र पढ़ेः-

स्वस्ति वाचनम्

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्तिन स्ताक्ष्यो अरिष्ट नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥१॥

बढ़ी हुई कीर्ति अर्थात् यश ऐश्वर्य से सम्पन्न इन्द्र देव एवं सभी कुछ जानने में समर्थ सर्वज्ञ अन्तर्यामी सूर्यनारायण तथा गरुड़ देव जिनके पंख खण्डित नहीं, बड़े-बड़े हैं और समस्त देवताओं के गुरु-श्री बृहस्पति जी महाराज आप सबके सब प्रकार से कल्याणकारक हों।१।।

पयः पृथिव्यां पयऔषधीषुं पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।२।।

हे अग्निदेव! आप आकाश-पृथ्वी, स्वर्ग एवं सभी प्रकार की औषधियों में अपना उत्तम से उत्तम रस धारण करो-जिससे कि मेरे लिये चारों दिशायें रस प्रदान करने वाली हों।।२।।

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।३।।

आप विष्णु रूप मण्डप के ललाट मस्तक हो। एवं मस्तक होते हुए विष्णु के होठों की सन्धि हो। आप विष्णु की सूचि हो एवं विष्णु की ग्रन्थि भी हो तभी तो आप विष्णु के सम्बंध वाले हो। इसी कारण मैं आपकी स्तुति करता हूं, जिससे विष्णु प्रसन्न हों।।३।।

ॐ अग्निदेवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसनो देवता रूद्रो देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता वृहस्पति र्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।४।।

आप अग्नि आदि सभी देवताओं के स्वरूप हो, मैं आपकी स्तुति करता हूँ।।४।।

ओं द्यौः शान्तिः रन्तरिक्षर्ठ्ंशान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्ति विश्वे देवाः शान्ति र्ब्रह्म शान्तिसर्वर्ठ्ंशान्तिः

शान्तिरेव शान्ति सा मा शान्ति रेधि॥५॥

द्यौ (अन्तरिक्ष) लोक, आकाश लोक, पृथ्वी, जल सभी औषधियां एवं वृक्ष, वनस्पति सभी देवस्वरूप एवं ब्रह्मस्वरूप हैं, सभी मुझे शान्तिरूप प्रदान करें॥५॥

सुशान्तिर्भवतु॥ ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव॥६॥

हे सूर्य नारायण हमारे सभी पापों को नष्ट करके हमें भद्र कल्याण की प्राप्ति कराओ॥६॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥७॥

सबके कल्याणकारक कपर्दी शंकर भगवान् यह सभी स्तुतियां आपके लिये हैं। हमें ऐसी बुद्धि प्रदान करो, जिससे हम विश्वभर के कल्याण के लिये अग्रसर रहें। दो पांव वाले मनुष्य एवं चार पांव वाले गौ आदि सबका कल्याण हो, कोई भी हमारे ग्राम, देश में आतुर दुःखित न रहे॥७॥

एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुवृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव॥८॥

हे सर्व समर्थ सूर्य देव! आप ब्रह्म, वृहस्पति एवं यज्ञ तथा यजमान तथा मेरी रक्षा कीजिये॥८॥

मनोजूर्तिर्जुष ता भाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञभिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमंदधातु। विश्वेदेवा सऽइह मादयन्तामो३ प्रविष्ठ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्व मेव प्रतिष्ठि तं भवति॥९॥

आपका मन यज्ञ सम्बंधी घृत में रहे। वृहस्पति यज्ञ का विस्तार करें। यज्ञ हिंसा रहित हो। सभी देवता यज्ञ में तृप्ति प्राप्त करें। इस प्रकार से प्रार्थित सूर्य नारायण प्रयाण करें। इस प्रकार का पूजन प्रतिष्ठा रूप है॥६॥

आपके गुण स्वामी अधिकार समूह सबको नमस्कार हो॥१०॥

अथ प्रतिज्ञा संकल्प

हरिः ॐ तत्सदद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्तेक-देशान्तरगते कलौ कलियुग प्रथमचरणे वैवस्वत-मन्वन्तरे अष्ठाविंशति तमे युगे श्रीवीर विक्रमा-दित्यीय अमुक संवत्सरे अमुकऋतौ अमुक मासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्र-योग युक्ते शुभदिने श्रीकात्यायनीदेवी प्रीतिहेतवे अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं अमुककर्म साफल्यता-

सिद्धये श्रीकात्ययानी शान्तिमहं करिष्ये। तत्पूर्वं तन्निर्विन्घपरि समाप्तिहेतवे गणपत्यादिदेव पूजनं च करिष्ये।

अथ गणपति पूजनम्

ओ गणानां त्वा गणपतिꣳहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधी नांत्वानिधि पतिꣳ हवामहेव्वसो मम। आहमजानि गर्भध मात्त्वमजा-सिगर्भधम्॥ ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो, व्रातेभ्यो ब्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेम्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः। ॐ सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छ्रणुयादपि विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गभे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते। गणेश्वरं विघ्न विनाश नं च लम्बोदरं मोदक वल्लभं च सुरासुरैः पूजित वन्दितं च गणेश्वरं शरण महंप्रपद्ये-श्री गणपतये नमः। ॐ भुर्भुवः स्व भगवन् गणपते। इहागच्छ इहातिष्ठं मम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूजां गृहाण। पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं स्नानीयं समर्पयामि वस्त्रोप वस्त्रोपरि कल्पित-मंगल सूत्रं समर्पयामि तिलकं गन्धं च समर्पयामि, अक्षतानि समर्पयामि, पुष्पाणि समर्पयामि धूप माध्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं समर्पयामि, नैवेद्यान्ते पुनराम चमनीयं समर्पयामि दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि, नमस्कार च करोम्य हम्।

वक्रतुण्डमहाकाय कोटि सूर्य समप्रभ।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रूद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।

तदनन्तर चावल लेकर पंचोंकार का आवाहन तथा पूजन करे। आवाहन श्लोका:-

आवाहयाभ्यहं देव मोंकार परमेश्वरम्।
त्रिमात्रं त्र्यक्षरंदिव्यं त्रिपदं च त्रिदैवकम्।।१।।
त्र्यक्षरं त्रिगुणाकारं सर्वाक्षर मयं शुभम्।
त्र्यर्णवं प्रणवं हंसं स्रष्टारं परमेश्वरम्।।२।।
अनादि निधनं देव म प्रमेयं सनातनम्।
परं परतरं बीजं निर्मलं निष्कलं शुभम्।।३।।
ओकारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः
कामरं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः।।४।।

पूजन मंत्र-ॐ आब्रह्मन् ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइष-व्योति व्याधी महारथो जाय ताम् दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वाशुसप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयोयुवाऽस्ये यजमानस्य वीरो जाय तान्निकामो निकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽऔषधयः पच्यन्तां योगक्षेमोनः कल्पताम्।।५।। पाद्यामिभिः सम्पूजयेत्।

हे परम दयामय ब्रह्मन्! हमारे राष्ट्र में ब्राह्मणवर्ग आपकी परम कृपा से ब्रह्मतेज से संयुक्त हो। क्षत्रिय वर्गों में किसी प्रकार की व्याधि तथा कायरता न आने पावे। यजमान यज्ञ करने वालों को दुग्ध प्रदान करने वाली गौएं प्राप्त हों और उन्हें बैल तथा चिरंजीवी पुत्र पौत्रादि प्राप्त हों। हे परम दयालु हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे राष्ट्र में धन-धान्य, फल, औषधियों को उत्पन्न कराने वाली वर्षाएं हों। आपकी कृपा से हमें योग क्षेम प्राप्त हो इस मन्त्र द्वारा पूजन करके नमस्कार करे।

अथ रक्षा विधानम्-ॐ मानः शं सोऽअररूषोधूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य। रक्षाणो ब्राह्मणस्पतेः।।१।। ॐ यदा बध्नम् दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नमि शतशारदायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।

यह मन्त्र पढ़कर यजमान को रक्षाबन्धन अर्थात् मोली द्वारा कंकण बांधे। मन्त्र का भावार्थ यह है कि

हमारे अनिष्ट का विचार करने वाले जो शत्रु हों, हे ब्राह्मण हम उनसे प्रबल शक्ति सम्पन्न हों। दक्ष प्रजापति की सन्तान ने जैसे अधिक सैन्य राजा को बांधा था, उसी प्रकार हमें भी शतवर्ष के जीवन के लिए बांधे हम सर्वथा कुशल पूर्वक रहें।

अथ मातृ पूजनम्- **गौरी पद्माशची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा मातरो लोक मातरः॥१॥ हृष्टिः पुष्टि स्तथा तुष्टि स्तथात्मकुलदेवता। श्री कुलदेव्यन्तर्गत गौर्यादि षोड़शमातृभ्यो नमः॥२॥**

पाद्यादि द्वारा इससे षोड़शमातृ पूजन कराकर ऋत्विजों का आवरण करे।

कंकण दक्षिणा द्वारा ब्रह्मा का आवरण कंकण बाधें

यथा चतुर्मुखो ब्रह्म सर्व वेद धरः प्रभुः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्म भव द्विजोत्तम॥१॥

फिर यजमान ब्राह्मण का करांगुष्ठ लेकर पढ़े।

अस्यकर्मणः प्रतिष्ठापनार्थं त्वं ब्रह्म भव।

ब्राह्मण कहे-**अहं भवामि।**

आचार्य आवरण कंकण बांधेः

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां वृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुब्रत॥२॥

फिर यजमान ब्राह्मण के करांगुष्ठ को लेकर बोले-

हे सुब्रत अस्मिन् यक्षे त्वं मम आचार्यो भव।

ब्राह्मण कहे। **अहं भवामि ऋग्वेदः पद्मपत्राक्षो गायत्र्यः सोमदेवतः। अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र ऋत्त्विक् त्वं मे मखे भव॥३॥**

कंकण बांध कर करांगुष्ठ लेकर यजमान कहे

अस्य कर्मणः प्रतिष्ठापनार्थं त्वं ऋग्वेदी भव। अहं भवामि, ऐसा ब्राह्मण कहे

कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रिष्ठु भो ब्रह्मदेवतः।
भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र ऋत्त्विक त्वं मे मखे भव॥४॥

कंकण बांध कर करांगुष्ठ लेकर यजमान कहे।

अस्य कर्मणः प्रतिष्ठापनार्थं त्वं यजुर्वेदी भव अहं भवामि। ऐसा ब्राह्मण कहे

सामवेदस्तु पिंगाक्षस्त्रैष्ठुभो विष्णुदेवतः।
काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र ऋत्त्विक त्वं मे मखे भव॥५॥

कंकण बांध कर करांगुष्ठ लेकर यजमान कहे।

अस्य कर्मणः प्रतिष्ठापनार्थं त्वं मे सामवेदी भव अहं भवामि। ऐसा ब्राह्मण कहे

वृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्ठुभो रूद्रदैवतः।
वैखान सोऽत्रविपेन्द्र ऋत्त्विक त्वं मे मखे भव॥६॥

कंकण बांध कर करांगुष्ठ लेकर यजमान कहे।

अस्य कर्मणः प्रतिष्ठापनार्थं त्वं मे अथर्व वेदी भव अहं भवामि, ऐसा ब्राह्मण कहे

अथ आशीर्वाद

आचार्य ब्राह्मण अपने हाथ में कंकण (राखी) यज्ञ के पुष्प, अक्षत लेकर प्रथम यजमान को राखी बांधते हुए बोले-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रति बध्नामि रक्षो मा चल मा चल॥

तत्पश्चात् यजमान के हाथ में यज्ञ पुष्प फलाक्षत देकर पढ़े।

ऋग्वेदस्तु यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः।
ब्रह्मवाक्यैश्च तैर्नित्यं न्यिंन्तां तव शत्रवः॥१॥
अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
अधनाः सधनाः सन्तु सन्तु सर्वार्थ साधकाः॥२॥
विप्रहस्ताच्च गृहणीयात् यज्ञ पुष्पफलाक्षतान्।
चत्त्वारस्तव वर्धन्ता आयुः कीर्तिर्यशोबलम्॥३॥

जिस राखी (रक्षाबन्धन) के द्वारा महाबली दानवेन्द्र राजा बली बांधे गये उसी रक्षा को हम तुम्हें बान्ध रहे हैं। हे रक्षः इस यजमान की सदा रक्षा करें। ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद, अथर्ववेद एवं ब्रह्मवाक्य इन सबसे हे यजमान तुम्हारे शत्रुओं का नाश हो। पुत्र रहित पुत्र प्राप्त करें, पुत्रों वाले पौत्रवान् हो, निर्धनजन धन प्राप्त करें, अपने सभी अर्थ सिद्ध करने वाले हों। ब्राह्मण के हाथ से यह यज्ञ के

पुष्प फल अक्षतों को ग्रहण करो जिससे तुम्हारी बड़ी आयु हो। कीर्ति प्राप्त करो, यशस्वी बनो और बलवान बनो ये चारों वस्तुए तुम्हारी वृद्धि को प्राप्त हों।।३।। तत्पश्चात् यजमान "ओं त्र्यम्बकं यजामहे0" इस वेदोक्त मन्त्र का ।।अद्येत्यादि0।। संकल्प द्वारा आचार्य के अतिरिक्त अन्य ब्राह्मणों को दश सहस्त्र परिमित जपन करने को कहे फिर ब्राह्मण दृढ़ संकल्प होकर दत्तचित्त जपन करने बैठ जाए। इसके अनन्तर ईशान कोण में कलश स्थापन करे।

अथ कलशपूजनम्।

ॐ ऋग्वेदाय नमः। यजुर्वेदा य नमः। सामवेदाय नमः अथर्व वेदाय नमः। कलशाय नमः। रूद्राय नमः। वरूणाय नमः समुद्राय नमः। गंगायै नमः। यमुनायैः नमः। सरस्वत्यै नमः। कलशकुम्भाय नमः। ब्रह्मणा निर्मित स्त्वं हि रे वा मत्रै मृतोद्भवः। प्रार्थयामि च त्वां कुम्भ वांछितार्थ तु देहि मे।।१।। ॐ वरुण स्योत्तम्भनमसि वरुणस्य रकम्भ सर्ज नीस्थो वरुणस्यऽऋत सदन्यसी वरुणस्यऽऋत सदनम सी वरुणस्यऽऋतु सदन मासीद। पाद्यार्घ्यादिभिः सम्पूजयेत्।

वास्तु पूजनम्

अथात्: सम्प्रवक्ष्यामि यदुक्तं वास्तु पूजनम्।
येन पूजा विधानेन कर्म सिद्धि स्तु जायते।।
अनन्तं पुण्डरी काक्षं फणाशत विभूषितम्।
विद्युद् बन्धूक सदृशं कूर्मारूढं प्रपूजयेत्।

इसके पश्चात् वास्तु पूजा कहते हैं। जिसकी पूजा करने से सभी प्रकार की कामनाएं सिद्ध हो जाती हैं। वास्तु-भगवान अनन्त हैं जिनके कमल के समान नेत्र हैं फणों से शोभायमान हैं। जिनका आकार विद्युद् बन्धूक नामक पुष्प के समान है। कूर्म के ऊपर आरूढ़ (चढ़े) हुए हैं, इनका प्रेमपूर्वक पूजन करे। पाद्यादियों से पूजन करे।

निम्नलिखित मन्त्र द्वारा नमस्कार करें।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये केच पृथ्वी मनु।
येऽन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्यो नम:
वासुक्याद्यष्ट नागेभ्यो नम:।

पृथ्वी आकाश स्वर्ग लोक में निवास करने वाले सभी नागों को प्रणाम हो। इस प्रकार प्रणाम कर योगिनी का आवाहन पूजन करे।

अथ योगिनी पूजनम्

ॐ आवाह याम्यहं देवीं योगिनी परमेश्वरीम्।
योगाभ्यासेन संतुष्ठा पर ध्यान समन्विता:।।१।।
दिव्य कुण्डल संकाशा दिव्यज्वाला त्रिलोचनी।
मूर्तिमती ह्यमूर्ता च उग्राचैवोग्ररूपिणी।।२।।
अनेक भाव संयुक्ता संसारार्णव तारिणी।
यज्ञ कुर्वन्तु निर्विघ्नं श्रे यो यच्छन्तु मातर:।।३।।
दिव्य योगी महा योगी सिद्ध योगी गणेश्वरी।
प्रेताशी डाकिनी काली कालरात्री निशा चरी।।४।।
हुंकारी सिद्धवेताली खर्परी भूतागामिनी।
ऊर्ध्वकेशी विरूपाक्षी शुष्कांगी मांसभोजनी।।५।।
फूत्कारी वीर भद्राक्षी धूम्राक्षी च कलह प्रिया।
घोरा च घोर रक्ताक्षीवि रूपाक्षी भयं करी।।६।।
चौरिका मारिका चण्डी वाराही मुण्ड धारिणी।
भैरवी चक्रिणी क्रोधा दुर्मुखी प्रेत वासिनी।।७।।
कालाक्षी मोहिनी चक्री कंकाली भुवनेश्वरी।
कुण्डला ताल कौमारी यमदूती करालिनी।।८।।
कौशिकी यक्षिणी यक्षी कौमारी यंत्र वाहिनी।
दुर्घटे विकटे घोरे कपाले विष लंघने।।९।।
चतुष्षष्ठि समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदा:।
त्रैलोक्ये पूजिता नित्यं देव मानुष योगिभि:।।१०।।

अथ ब्रह्मपूजा

ॐ ब्रह्मय ज्ञानं प्रथमं पुंरस्ता द्विसीमतः सुरुचौ वेन आवः। सुबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः। इति पाद्यादिभिः पूजयेत्।?

अथ विष्णु पूजा

ॐ विष्णो रराढमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णु ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्त्वा ॐ विष्ण वे नमः इति विष्णु पाद्यादिभिः पूजयेत्।

अथ शिवपूजा

ॐ नमः शम्भवाय च मयोम वाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च। ॐ शिवाय नमः। पाद्यादिभिः पूजयेत्।

ब्रह्मय ज्ञान से ब्रह्मा का, विष्णोः से विष्णु का नमशम्भ वाय से शङ्कर का पूजन करे।

अथः इन्द्रपूजनम्

ॐ त्रातारमिन्द्र मवतारमिन्द्रं हवे हवे सुहवं शूरमिन्द्रम्। हव्यामि शक्रं पुरु ह्वतमिन्दं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः। इतिपूजयेत्।

अथ वायोः पूजनम्।

ॐ वायोजेते सहस्त्रिणे रथासस्ते भरागहि। नियुत्त्वान् सोमपीतये। ॐ वातो वामनो वा गन्धर्वाः सप्तविंशति तेऽअग्रे श्वमयुञ्जंस्ते अस्मिन्नव मादधुः। ॐ वायवे नमः। इति पाद्यादिभिः प्रपूजयेत्।

अथ धर्म पूजनम्

ॐ अग्ने सपत्क्नदम्मन मद ब्धासोऽदाभ्यम् चित्रावसो स्वस्तिते पारमशी य, धर्माय नमः। पाद्यादिभिः पूजयेत्।

अथ-यमपूजनम्

ॐ असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसित्रित्तो गुह्यने व्रतेन अस्ति सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिविबन्धनानि। इतियम पूजा दक्षिणे कार्या।।

इस प्रकार-इन्द्र वायु, धर्म, यम्, इनका उपरोक्त "त्रातार मिन्द्र,, वायो येते,, अग्ने सपत्क,, असियमो,, मन्त्रों से पूजन करे।

अथ नवग्रह पूजनम्

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त मानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच। हिरण्येन सविता रथेना देवो यातिभुव

नानि पश्यन् ॐ सूर्याय नमः। अनेन मंत्रेण सूर्यं पाद्यादिभिः पूजयेत्॥१॥

ॐ इमं देवाऽअसपत्नꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाय महते जान राज्यायेन्द्रस्ये न्द्रियाय इमममुष्य पुत्र मस्यै विश एषवोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानांꣳ राजा ॐ सोमाय नमः। इत्यनेन चन्द्रमसं पूजयेत्॥२॥

ॐ अग्नि र्मूर्द्धा दिवः कंकुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपाꣳ रेताꣳ सिजिन्वति। ॐ भौमाय नमः॥३॥

ॐ उद्‌बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्व मिष्टापूर्तेसꣳ सृजेथामयंच। अस्मिन्त्स धस्थेऽध्युत्तस्मिन् विश्वे देवाय जमानश्चसीदत। बुधाय नमः॥४॥

ॐ वृहस्पतेऽअतियदर्योऽ अर्हाद्यु मद्विभाति ऋतु मज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसऽऋत प्रजा तद स्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ वृहस्पतये नमः॥५॥

ॐ अन्नात्परिस्त्रु तो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानꣳ शुक्रमन्ध स इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयोमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय नमः॥६॥

ॐ शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीत ये। शंयोरभि स्रवन्तुनः ॐ शनैश्चराय नमः॥७॥

ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदाबृधः सखा। कया शचिष्ठ यावृता।। ॐ राहुवे नमः।।८।।
ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिर जायथाः।। ॐ केतवे नमः।।९।।
नमस्कारा:।। ॐ ब्रह्म मुरारि स्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमि सुतो बुधश्च। गुरुश्च शुक्रः शनिः राहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।१०।।

इस प्रकार मन्त्रों द्वारा नवग्रह पूजन करे फिर त्र्यम्बक, तथा श्री का पूजन करे। तत्पश्चात् श्री कात्यायनी का पूजन करे। मन्त्र यह है।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुक मिव बन्धना न्मृत्योर्मुक्षीयमात्मृतात्।। श्री त्र्यम्बकाय नमः।। त्र्यम्बक पूजा।।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मी श्चपत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनो व्यात्तम। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्म इषाण। श्री लक्ष्म्यै नमः।।

श्री कात्यायिन्याः पूजायां प्रथमं संकल्पं कुर्यात्।

हरिः ॐ तत्सद द्यैतत्पठित्वा देशकालौ परिकीर्त्य- अमुकगोत्रोऽमुकनामाह ममुक कामना सिध्यर्थे श्री कात्यायनी देवी प्रीतये यथागृहीत संभारैः श्री कात्यायनी देवी प्रपूजये। एवं संकल्प्य

स्वसामर्थ्यानु सारेण संयोजिते स्वर्ण मूर्तिगृहीत्वा पाद्यार्ध्या चमनीयस्नान पंचामृत स्नानादिभिः सम्पूज्य तिलक मण्डलमध्यस्थ कलशोपरि निदध्यात्। ततः स्त्रियो चितवस्त्रत्रयेणाछाद्य तिलकं गन्धं सुगन्धिद्रव्यं च समर्पयेत् पुष्पाणि पुष्पमालिकां च समर्प्य पायसा पूपादि नैवेद्यं च समर्पयेत् ततः आचमनीयं कारयित्त्वा ताम्बूलं पूगी फलं वा समर्प्य ऋतु फलानि समर्पयेत्॥१॥

ततोः धूप माघ्राप्य दीपं दर्शयित्वा दक्षिणा-द्रव्यंच समर्प्य पुष्पांजलिना सत्कृत्य प्रार्थनां नमस्कारं कुयति्॥

प्रार्थनाः

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
भदीयां कामनां पूर्ति कुरु देवि नमोऽस्तुते॥१॥

नमस्कारः

शरणागतदी नार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्या र्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥२॥
सर्व मंगलमांगल्ये शिवेसर्वार्थसाधिके।
शरणये त्र्यम्बके देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥३॥

कात्यायनी देवी की पूजा में सर्वप्रथम संकल्प करे।

"ओं तत्सदद्य", इत्यादि पढ़कर देश कालादि कहकर अपना गोत्र नामादि बोलकर अपनी निजी कामना (पति पुत्रादि) की सिद्धि के लिये श्री कात्यायनी देवी की प्रीति के अर्थ यथाशक्य सम्पन्न सामग्री द्वारा श्री कात्यायनी देवी की मैं पूजा करता हूं। इस प्रकार संकल्प करके अपने सामर्थ्यानुसार सिद्ध कराई हुई स्वर्ण मूर्ति को लेकर पाद्य अर्घ्य आचमन स्नान पंचामृतादि स्नान से पूजन करके तिलक मण्डल के मध्य में स्थित कलश के ऊपर धारण करे। तत्पश्चात् स्त्री उचित अर्थात् स्त्रियों के धारण करने के योग्य उतने ही बड़े तीन वस्त्रों से मूर्ति को धारण करावे। फिर तिलक गन्ध सुगन्धि तेल इत्रादि समर्पण करे। पुष्प, पुष्पमालिका समर्पण करके पायस (खीर) अपूप (पूए) आदि का नैवेद्य अर्पण करे। फिर आचमन करावे। ताम्बूल सुपारी अपर्ण करके ऋतु फल अर्पित करे। तत्पश्चात् धूप, दीप दिखाकर दक्षिणा, द्रव्य अर्पण करे। फिर पुष्पांजलि द्वारा सत्कार करके प्रार्थना व नमस्कार करे।

प्रार्थनाः-हे कात्यायनि, हे महामाये, योगिनि, सर्व की अधीश्वरी आपको नमस्कार हो, मेरी अमुक कामना पूर्ण करो।।१।।

नमस्कारः-शरण में आये हुए दीन आर्तजनों की रक्षा करने में तत्पर सर्व के दुःख दूर करने वाली नारायणी देवी आपको नमस्कार हो।।२।। सभी मंगलों को मंगल रूप करने वाली शिवे कल्याण कर्त्रीत्र्यम्बक तीन नेत्र धारण

करने वाली तीन प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न नारायणि देवी आपको नमस्कार हो।।३।।

अथ कुशकण्डिका

ततो होमार्थं चतुरङ्ग- लोच्छ्रित हस्तमात्र परिमितां वेदि कुर्यात्। कुशैः परि समूह्य तान् कुशान् ऐशान्यां परित्यज्य गोमयोदके नोपलिप्य खादिरेणस्त्रुवेण चोल्लेख- नम्। हस्तेनो द्धरणम्। जलेनाभ्युक्षणम्। कांस्य पात्रयुगलेन लौकिकं निर्मथितं वा अग्नि मादाय स्थापयेत्। ततः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासांस्यादय औ अद्य कर्तव्यामुक्त शान्ति होम कर्मणि कृताकृ तावेक्षण रूप ब्रह्म कर्म कर्तु ममुक गोत्र ममुक शर्माण मेभिः पुष्प चन्दन ताम्बूल वासोभिर्ब्रह्म त्वेन त्वामहं वृणे-इतिब्रह्माणं वृणुयात्। ॐ वृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्! तथा विहितं कर्मकुरू इति आचार्येणोक्ते कर वाणीत्ति प्रति वचनम् ततोऽग्ने र्दक्षिणतः शुद्ध मासन दत्त्वा तदुपरि प्रागग्रान् कुशानास्तीर्य अग्नि प्रदक्षिणा कार- यित्त्वाऽस्मिन् कर्मणि त्वं मे ब्रह्म भवेत्याभिधाय भवानीति तेनोक्ते तदुपरि ब्रह्मण मुदङ् मुखमुपवेश्य प्रणीता पात्रं पुरतः कृत्त्वा वारिणा प्रपूर्य कुशैराछाद्य

ब्रह्मणोंमुख मवलोक्य अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्।

अब कुशकण्डिका का विधान कहते हैं। हवन के लिये चार अंगुल प्रमाण ऊंची और एक हाथ प्रमाण चतुष्कोण वेदी की रचना करे। सर्वप्रथम कुशाओं द्वारा वेदी का परि समूहन करके उन कुशाओं को ईशान कोण की ओर डाल दे। फिर जल तथा गोबर से लीपे। खादिर स्त्रवा के द्वारा छः रेखाएं अनामिका तथा अंगुष्ठ से खींचे फिर अनामिका अंगुष्ठ के द्वारा ही मिट्टी उठाकर जल सिंचित करे। फिर कांस्य पात्र द्वारा लौकिक किंवा अरणि मन्थन से उत्पादित अग्नि लाकर वेदी पर स्थापित करे। तत्पश्चात् पुष्प चन्दन ताम्बूल लेकर और वस्त्र भी लेकर संकल्प द्वारा ब्राह्मण के गोत्र तथा नाम लेकर ब्रह्मा का वरण करे। ब्राह्मण वरणी लेकर वृतोऽस्मीति, प्रतिवचन कहे। तब आचार्य कहे यथाविहित कर्म कीजिये ऐसा कहने पर मैं करता हूँ, ब्राह्मण यह उत्तर दे। फिर अग्नि से दक्षिण की ओर शुद्ध आसन देकर उस पर पूर्वाग्र कुश बिछाकर अग्नि की प्रदक्षिणा कराकर "अस्मिन कर्मणि त्वं में ब्रह्मा भव, ऐसा कहे तथा भवानी" ब्रह्मा के ऐसा कहने पर उसे उत्तराभिमुख बिठा दे। फिर प्रणीता पात्र आगे रखकर जल से भरकर कुशाओं से ढक्कर ब्रह्मा का मुख देखकर अग्नि के उत्तर की ओर कुशाओं पर स्थापित करे

ततः परिस्तरणम्। बर्हिशश्चतुर्थभाग मादा-

याग्नेय्यादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्नि पर्यन्तम्। नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्। अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम्। ततोऽग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्। पवित्र करणार्थं साग्र मनन्तर्गर्भ कुशपत्र द्वयम्। प्रोक्षणी पात्रम्। आज्यस्थाली। सम्मार्जनार्थं कुशत्रयम्। उपयमनार्थं वेणीरूपकुशत्रयम्। समिधस्तिस्त्रः। स्रु वः आज्यम्। षढ पंचाशदुत्तरा-चार्य मुष्टिशत द्वयावच्छिन्न तराडुल पूर्णपात्रम्। ततः पवित्र छेदन कुशानां पूर्व पूर्व दिशि क्रमेणासादनी यानि। ततः पवित्रछेदन कुशैः पवित्रे छित्त्वा सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय अनामिका गुंष्ठांभ्यां स पवित्रे उत्तराग्रे गृहीत्त्वा त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षणीपात्रे वामकरेणादाय अनामिकांगुंष्ठाभ्यां गृहीत पवित्रा-भ्यां तज्जलं किञ्चित् त्रिरुत्क्षिप्य प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीमभिषच्य प्रोक्षणी जले नासा दितवस्तु-सिंचनं कृत्वा अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्। आज्यस्थाल्या माज्यं निर्वाप्याधि-श्रयणम्। ततः कुशं प्रज्वाल्योपरि प्रदक्षिणां भ्रामयित्त्वा वन्हौ प्रतत्यक्षिप्य स्रुवं त्रिः प्रतप्य

सम्मार्जन कुशाना मग्रैरन्तरतो मूलै र्बास्यतः स्त्रुवं सम्मृज्य प्रजी तोद केनाभ्युक्ष्य पुनस्त्रिः प्रतप्य दक्षिणतो निदध्यात्। आज्यस्याग्नेर वतारणम्। ततः आज्यं प्रोक्षणीवदुत्पूया वेक्ष्य सत्य पद्रव्ये तन्निरसनं कृत्त्वा पुनः प्रोक्षणी मुत्पूय। ततः उत्थायोपयमन कुशान् वामहस्ते कृत्त्वा प्रजापति मनसाध्यात्त्वा तूष्णी मग्नौ घृताक्ताः समिधा-स्तिस्त्रः क्षिपेत्। उपविश्य सपवित्र प्रोक्षरायुदकेन प्रदक्षिण क्रमेणाग्निं पर्युक्ष्य प्रणीतापात्रे पवित्रे निधाय पातितदक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणान्वा-रब्धः समिद्धत्तमेऽग्नौ स्त्रुवेणाज्याहुतीर्जुहोति। तत्तदा हुत्यनन्तरं स्रुवा वस्थित घृत शेषस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः॥

अथ स्रुव पूजनम्-

ॐ आवाहयाम्यहं देवं स्रुवं शेवधिमुत्तमम्।
स्वाहा कार स्वधाकार वषट्कार समन्वितम्॥१॥
अष्ठांगुलं त्यजेन्मूलं मग्रेत्यक्त्का दशांगुलम्। कर्तव्यं गोपदाकारं दण्डस्याग्रे तु कंकणम्॥२॥
विष्णोःस्थानं प्रग्रहणीयाद्धूयते च हुताशनम्
पद्मयोनिं समादाय होता सुखमवापुन्यात॥३॥

इति स्रुव पूजनम्।

अथ स्रुव पूजनम्

तत्पश्चात्, परिस्तरण करे। वेदी के चारों ओर कुशा बिछाये। सर्वप्रथम बर्ही कुशाओं का चतुर्थ भाग लेकर अग्निकोण से ईशानकोण तक बिछावे। फिर ब्रह्मा से लेकर अग्नि पर्यन्त। फिर नैऋत्य से वायव्य तक। अग्नि से प्रनीता पर्यन्त आसादित करे। इसके पश्चात् अग्नि से उत्तर की ओर पश्चिम दिशा में पवित्र छेदन के लिये तीन कुशा स्थापित करे। पवित्र करने के लिये साग्र अनन्त गर्भवाले दो कुशापत्र रक्खे। प्रोक्षणी पात्र आज्यस्थाली। सम्मार्जन के लिये तीन कुशा। उपयमन के लिए वेणी रूप तीन कुशा। तीन समिधा। स्त्रुवा धृत २५६ मुट्ठी चावलों से भरा हुआ पूर्ण पात्र। ये सब पवित्र छेदन कुशा से पूर्ण पूर्व दिशा में आसादित करता जाए। तब पवित्र छेदन कुशाओं से पवित्र छेदन करके उसी पवित्र वाले हाथ से प्रणीता के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डालकर अनामिका और अंगूठे द्वारा उत्तराग्र पवित्र को तीन बार उत्पन्न करे फिर प्रोक्षणी पात्र को बांये हाथ में लेकर सपवित्र उसके जल को ऊपर की ओर कुछ कुछ उत्क्षेणा करके प्रणीता पात्र के जल से प्रोक्षणी को अभिवेचन कर फिर प्रोक्षणी जल से आसादित वस्तुओं का सिंचन करके अग्नि प्रणीता पात्र के मध्य में प्रोक्षणी पात्र स्थापित करे। फिर राज्य स्थली में घृत डालकर अग्नि पर धर देवे। तब कुशाओं को जलाकर घी की प्रदक्षिणा कराकर अग्नि में उन्हें डालकर स्त्रुवा को तीन बार तपाये फिर सम्मार्जन

कुशाओं के अग्रभाग से भीतर के भाग से बाहर एवं अन्दर के भाग को सम्मार्जन करके प्रणीता जल से अभिसिंचन करके फिर तीन बार तपाकर उसे दक्षिण की ओर रख दे। उसके अनन्तर घृत को अग्नि से उतारे। उस घृत को प्रोक्षणी की भांति उत्पन्न करे, उसमें कोई अपद्रव्य दिखाई दे तो उसे निकाल दे, फिर प्रोक्षणीवत उत्पन्न करे। उपयमन कुशाओं को वाम हस्त में लेकर स्वयं उठकर मन से प्रजापति का ध्यान करके घृत में डुबाई हुई तीन समिधाएं चुपचाप अग्नि में डाल दे। इसके अनन्तर बैठ जाए। सपवित्र प्रोक्षणी जल से प्रदक्षिण क्रम से अग्नि का पर्युक्षण करे। फिर प्रणीता पात्र में पवित्रे रखकर दायां घुटना डालकर कुशा से ब्रह्म का सम्बन्ध कराकर प्रदीप्त अग्नि में स्त्रुवा द्वारा घृत की आहुतियां दे। प्रत्येक आहुति के अनन्तर स्त्रुवा में अवस्थित शेष घृत को प्रोक्षणी पात्र में डालता जाए।

स्रुव पूजन उपरोक्त- **"आवाह याभ्यहं"** इत्यादि मंत्रों को पढ़कर करे।

अथ घृताहुति

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय इत्याघारौ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इद मग्नये। ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय॥ इत्याज्य भागौ॥

ॐ भूः स्वाहा, इदं भूः। ॐ भुवः स्वाहाः इदं भुवः। ॐ स्वः स्वाहा, इदं स्वः। एता महाव्याहृतयः।

ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअवयासि सीष्टाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषाᳪसि प्रभु मुग्ध्यस्मत्स्वाहा॥ इदमग्नी वरुणाभ्याम्०॥

ॐ सत्वन्नोऽअग्ने व मो भवोतीने दिष्ठोऽ अस्याऽउषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणᳪरराणो व्रीहि मृडीकᳪसुहवोन एधि स्वाहा। इदमग्नये ॐ अयाश्चाग्ने स्यनभि शस्ति पाश्च सत्त्व मित्त्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषजᳪस्वाहा॥ इदमग्नये०॥

ॐ ये ते शतं वरूणये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशाह वितता महान्तः। तेभिर्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरूतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्रम्यःस्वर्केयश्च न मम।

ॐ उदुत्तम वरुणपाशमस्मद बाधमं विमध्यम ॐ श्रथाय। अथा वय मा दित्य ब्रते तवा नागसोऽअ दितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणाय०।। एतासर्व प्रायश्चित संज्ञकाः।। ॐ गणपतये स्वाहा। इदं गणपतये०।। ॐ विष्णवे स्वाहा, इदं विष्णवे०।। ॐ शम्भवे स्वाहा, इदं शम्भवे०।। ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा, इदं लक्ष्म्यै०।। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा, इदं सरस्वत्यै०।। ॐ भूम्यै स्वाहा, इदं भूम्यै। ॐ सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय। ॐ चन्द्रमसे स्वाहा इदं चन्द्रमसे। ॐ भौमाय स्वाहा, इदं भौमाय। ॐ बुधाय स्वाहा, इदं बुधाय। ॐ वृहस्पतये स्वाहा, इदं वृहस्पतये। ॐ शुक्राय स्वाहा, इदं शुक्राय। ॐ शनैश्चराय स्वाहा, इदं शनैश्चराय। ॐ राहवे स्वाहा, इदं राहवे। ॐ केतवे स्वाहा, इदं केतवे। ॐ व्युष्ठैच स्वाहा, इदं व्युष्ठैच। ॐ उग्राय स्वाहा, इदं उग्राय। ॐ शतक्रतवे स्वाहा, इदं शतक्रतवे। ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये। मनसा इति प्रजापत्यः।

ॐ अग्नये स्विष्ठ कृते स्वाहा, इदं मग्नये स्विष्ठ कृते। इतिस्विष्ठ कृद्धोमः। ततः मृत्युंजय जपनस्यापि दशांश होमः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्ठि वर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय माभृतादिति मंत्रेण।

ततः संस्त्रव प्राशनम् आचमनम्। ततो ब्रह्मणे पूर्ण पात्रेण सह दक्षिणा दानम् ॐ अद्य एतस्मिन् शान्ति होम कर्मणि कृताकृतावे क्षण रूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठाप नार्थं मिदं तण्डुल पूर्ण पात्रं सदक्षिणं प्रजापति दैवतम मुकगोत्राय मुकशर्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणां दातु मह मुत्सृज्ये। ॐ स्वस्ति, इति प्रतिवचनम्॥

इस प्रकार होम हो जाने पर संस्त्रव प्राशन करे। फिर आचमन करे। उसके अनन्तर पूर्णपात्र तथा दक्षिणा लेकर संकल्प करके ब्रह्मा को दान करे। फिर ब्रह्मा ब्राह्मण ॐ स्वस्ति ऐसा वचन कहे।

ततो ब्रह्मग्रन्थिः विमोकः। ततः-ॐ सुमित्रि-यानऽआपऽऔषधयः सन्तु। इति पवित्राभ्यां जल मानीय तेन शिरः सभ्मृज्य ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्ठि यं च वयं द्विष्मः इत्यैशान्यां प्रणीतान्युब्जी करणम्। ततः क्रमेण बर्हि रुत्थाप्य घृते नाभिघार्य हस्तेनैव जुहुयात्॥ ॐ देवागातु विदो गातुं वित्त्वा गातु मित मनस स्पत इमं देव

यज्ञथ्ं स्वाहा। वाते धाः स्वाहा। इति बहि होमः।

तब ब्रह्मग्रन्थि विमोचित करें। फिर सुमित्रियान, इस मन्त्र को पढ़कर प्रणीता पात्र के जल को सिर पर छिड़के। फिर "दुर्मित्रिया" इस मन्त्र को पढ़कर प्रणीता पात्र ईशान दिशा में उल्टा कर डाले। उसके पश्चात् क्रम क्रम से आस्तृत बर्ही-कुशा उठा उठाकर घृत में भिगो-भिगोकर "ॐ देवागातु" यह मन्त्र पढ़ कर हाथ द्वारा ही हवन कर दे। इस प्रकार बर्हि होम हुआ।

ततः आचारात दशदिग्पालेभ्यो दधिमाष-बलिर्देयः। क्षेत्र पालबलि दानं च। ततः स्थालीपाकादि पक्वा न्नेन गणपति प्रमुख मुसूर्यादि ग्रहभ्यस्त त्तन्मंत्रै र्बलिर्देयः।

फिर आचार क्रम में दशदिग्पालो को तथा क्षेत्रपाल को दधि तथा उरद की बलिये प्रदान करे। फिर स्थाली पाक में पके हुए अन्न द्वारा गणपति जिनमें मुख्य हैं, ऐसे सूर्यादिग्रहों को उन्हीं के मंत्रों को पढ़-पढ़कर बलियां प्रदान करे।

ततः कात्यायनी देव्यर्थं यथा शक्ति वस्त्राभूषण धेन्वादि संकल्प द्वारा दानम्। ततो ब्राह्मण भोजन संकल्पः।। ॐ अद्य तत्सत्कृतैतद-मुक कर्म सांगता सिद्धध्यर्थं यथोपस्थितेन

पायसाद्य न्नेन यथापरिमितान् ब्राह्मणानहं भोजयिष्ये।

दक्षिणा संकल्प

ॐ अद्य करिष्यमाण ब्राह्मण भोजन सांगता सिध्यर्थ मिदं दक्षिणाद्रव्यं तेभ्यो विभज्य दातु महं मुत्सृज्ये। ततः "त्र्यम्बकं यजा महे" इति वेदोक्त मंत्रेण कारित जपन दक्षिणापि ब्राह्मणेभ्यः संकल्पद्वारा देया ततः गुरवे दक्षिणा देया। ततःछाया पात्र दानम्। तदनन्तर पूर्णाहुतिः। तद्य-था-स्त्रुवेण पूगी- फलादिकं श्रीफलं वा गृहीत्त्वा पूर्णाहुति कुर्यात् एतन्मं त्रंपठेत्-

ॐ मूर्धानं दिवोऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृतमाजात मग्निम्! कविॐसम्राजमतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा।

ततः स्त्रुवेण भस्मानीय दक्षिणानामिका गृहीत भस्मना-"ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः" इति ललाढे "ॐ कश्यपस्य यायुषम्" इति ग्रीवायाम्। "ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्" इति दक्षिण बाहु मूले। "ॐ तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्" इति हृदि। यजमान पक्षे 'तन्नो' इति स्थाने 'तते' इति कथानीयम्।

ततोऽभिषेकः तच्चाम्रपल्लव कुशादिकेन कलशस्य जल मानीय "आपोहिष्ठे त्यादि मन्त्रैः यजमानमभिषिचेत्। तत आचार्यादीनां दक्षिणादेया ततो भूयसी दद्यात्।

ॐ आज्येन वर्द्धते बुद्धि राज्येन वर्धते यशः।
आज्येन वर्द्धते आयुर्दर्शनं पाप नाशनम्।।

अथ विशेषपूजा

ग्रहा गावो नरेन्द्रश्च ब्राह्मणाश्च विशेषतः पूजिताः प्रति पूज्यन्ते सावधानाभवन्तु ते।। इति।।

अथ अग्नि विसर्जनम्। गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वर यत्र ब्रह्मदयो देवा स्तत्र गच्छ हुताशन।।१।।
आगतास्तु यथा न्यायं पूजितास्तु यथा विधिः।
कृत्त्वा कृपां मयि देवा यत्र संस्तत्र गच्छतः।।२।।
यजमान हितार्थाय पुनरागमनाय च।
शत्रूणां बुद्धिनाशाय मित्राणां मुदयायच।।३।।
यथा शस्त्र प्रहाराणां कवचं वारणं भवेत्।
तद्वदेवाभिघातानां शान्तिर्भवति वारणम्।।४।।

तब कात्यायनी देवी के प्रीत्यर्थ यथाशक्ति वस्त्र आभूषण गौदान किंवा गोदुग्ध दक्षिणा दान करे। इसके अनन्तर ब्राह्मण भोजन का भी संकल्प करे फिर ब्राह्मण

भोजन नैमित्तिक दक्षिणा संकल्प करे। इसके पश्चात् जितनी संख्या में मत्युंजय "ओं त्र्यम्बकं" इस मन्त्र से जप कराया जाये, उसकी दक्षिणा भी संकल्प द्वारा करने वाले ब्राह्मणों को दे। इसके अनन्तर गुरु को दक्षिणा प्रदान करे, तब छाया पात्र का दान करे। यह सब कर चुकने के अनन्तर शुद्ध हो-स्रुवा में पूगी फलादिक किंवा घृताक्त श्रीफल लेकर पूर्णाहुति मन्त्र पढ़कर करे।

उसके अनन्तर स्रुवा से भस्म लेकर दक्षिण हाथ की अनामिका अंगुलि से भस्म लेकर "ओं व्यायुष" मन्त्र से मस्तक पर लगावे। फिर "कश्यप0" मन्त्र से ग्रीवा पर "यद्देवे0" मन्त्र से दक्षिण बाहुमूल पर "तन्नो0" मन्नू से हृदय पर यजमान पक्ष में "तन्नो" के स्थान "तत्ते" इस प्रकार बोले। उसके अनन्तर अभिषेक करे। अभिषेक में कलश के जल को आम के पत्ते एवं कुशा द्वारा लेकर 'ॐ आपोहिष्ठे त्यादि' मन्त्रों से यजमान का अभिषिंचन करे, फिर आचार्य ऋत्त्विज आदि सद्सस्यतियों को दक्षिणा देवे। फिर भूयसी दक्षिणा दे। फिर घृत संकल्प करे-क्यों कि घृत द्वारा बुद्धि, यश, आयु बढ़ती है। घृत दर्शन ही पापनाशक है।

फिर विशेष पूजा में ग्रह, गौए, नरेन्द्र तथा ब्राह्मण विशेष पूजनीय हैं। फिर अग्नि विसर्जन उपरोक्त मंत्रों द्वारा करे।

अथ ग्रहादीनां विसर्जनम्।। यान्तु देवगणाः

सर्वे पूजा मादाय मामकीम्। यजमानहितार्थाय पुनरागमनाय च॥१॥ ॐ अग्निमीले पुरोहितम्०, इत्यादि मन्त्रेण गणेशादीन् देवान् उत्थापयेत्॥ ॐ अग्नि मीले पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्त्विजम्। होतारं रत्न धातमम्॥ अथ धृतपक्वमिष्ठान्न दानम्ः

संकल्पः-ॐ विष्णु स्तत्सदद्यामुक गोत्रोऽमुक शर्माहमिदं घृतपक्वमिष्ठान्नं यथा नाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे श्री विष्णु प्रीति हेतवे। ॐ तद्दानसांगतासिध्यर्थे श्री विष्णुदेव प्रीतिहेतवे मिष्ठान्नदान दक्षिणामहं संप्रददे।

ॐ अद्य तत्सत् शुभकर्म-विवाहा द्यंग त्त्वेनेदं मिष्ठ घृतपक्वं विष्णु देवतं कुलदेवता प्रीतये सौभाग्य प्राप्ति हेतवे यथा नाम गोत्र ब्राह्मणायाहं संप्रददे। इति कन्या पक्षे। ततः सुपूजितं कंकण बन्धनम्। ततस्तिलकं कुर्यात्। तदनन्तरं सूर्यायार्ध्यदानम्।

॥ इति श्री कात्यायनी शान्तिः समाप्तम्॥

फिर "यान्तु देवगणाः" इत्यादि मंत्रों से ग्रह विसर्जन करे। इसके अनन्तर घृतपक्व मिष्ठान्न का दान तथा सांगता सिध्यर्थ दक्षिणा दान करें। फिर विवाहादि शुभकर्मों की सांगता सिद्धि के लिये सौभाग्य प्राप्ति के निमित्त

मिष्ठ घृत पक्व भी दान करे। इस प्रकार कन्या पक्ष में, उसके अनन्तर कंकण बन्धन कर, तब तिलक करे। उसके पश्चात् सूर्यनारायण को अर्घ्य प्रदान करें।

।। इति श्री कात्यायनीशान्तिः समाप्तम्।।

अथ गजदन्तविनिर्मित् भुजाभूषण संकल्पः-

ॐ अद्य० आत्मनःकापिक वाचिक मानसिक विविध पाप निवृत्यर्थं विष्णु लोकनिवास का मनया कर्तव्य कन्या विवाह कर्मांग भूतं गज दन्तविनिर्मितं सौभाग्य रूपं इदं भुजा भूषणं गन्ध र्व दैवतं यथानाम गोत्रायै कन्यायै दातु मुत्सृजे।

जप संकल्पः-ॐ तत्सदद्यति० श्रुति स्मृति पुराणान्तर्गत प्रतिपादित पुण्यफल प्राप्ति पूर्वक कायवाङ् मनःजन्मलग्न वर्षलग्न क्रूरभवनस्थ नगग्रह तत्तदशाधिकरणक क्रूर फलनिवर्तक श्री महामृत्युं जयप्रसादो पदानक विवाहित वधूसमेत सर्वायुः पर्यन्त सुख संभोग पुत्र पौत्रादि वंश धनधान्य विवृद्धि समस्त शत्रु यज्ञ विनाशन तथा सकलारिष्ठ निवारणोत्तर सकल मनोभिलाषित शुभ वांछा सिद्धये यथा सहस्त्रपरिमितस्य वेदोक्तस्य त्र्यम्बकं यजामहे, इत्यादियं त्रस्य जपन दक्षिणाद्रव्यं अमुगोत्रीय ब्राह्मणाय तुभ्यं सम्प्रददे।

।।अथ कात्यायनी व्रत कथा।।

सर्वप्रथम सब प्रकार के अभीष्ठ सिद्ध करने वाले इस उत्तम व्रत को श्रीकृष्ण सम्मिलन की कामना से गोप कुमारिकाओं ने किया और उनकी कामना भी सिद्ध हो गयी। अब प्रश्न यह है कि उन गोपकुमामिरयों को इस व्रत का पता कहां से लगा और इस व्रत को किस विधान से किया। इसके उत्तर में एक बड़ी सुन्दर कथा है, उसे सुनिये। यह कथा 'त्रिपुरा रहस्य माहात्म्य' खण्ड अध्याय 40 में इस प्रकार आती है। इसमें दत्तात्रेय ऋषि भार्गव परशुरामजी से इस व्रत की कथा एवं विधान इस प्रकार कहते हैं-

श्री यमुना जी के किनारे श्री कात्यायन मुनि चिरकाल से तपस्या कर रहे थे। श्रीकृष्ण सम्मिलन कामना वाली गोप-कन्याओं ने इन मुनि को तप करते देखा। उन्होंने विचार किया कि इस मुनि की सेवाकर इन्हें प्रसन्न करें तो यह मुनि श्रीकृष्ण सम्मिलन का कोई न कोई उपाय बताएंगे। इस प्रकार विचार करके मुनि के पास जाकर स्तुतियों द्वारा उन्हें प्रसन्न किया। अपना मनोरथ भी सुनाया। प्रसन्न होकर मुनि बोले-हे गोप कुमारिकाओं! तुम्हारा मनोरथ है तो कठिन, नारायण का सम्मिलन अत्यन्त दुस्साध्य है, किन्तु तुमने मुझे प्रसन्न किया है इसलिए मैं विचार करके उपाय कहता हूं। यह कहकर मुनि समाधि लगाकर बैठ गये। मुनि की समाधि में ही वह योगमाया

उत्पन्न हुई और बोली हे मुनिवर! आपका मनोरथ अवश्य सिद्ध होगा। हे मुने! आपके नाम से ही मेरा नाम कात्यायनी देवी होगा, इसी व्रत के करने से ही गोप कुमारियों की कामना सिद्ध होगी। यह कहकर कात्यायनी देवी अन्तर्ध्यान हो गयीं। तब कात्यायन मुनि ने उन्हें व्रत तथा उस व्रत का विधान समझाया। इसी व्रत के प्रभाव से उन गोपकुमारियों के मनोरथ सिद्ध हुए। दत्तात्रेय ऋषि से इस कथा को सुनकर फिर परशुरामजी ने प्रश्न किया कि हे ब्रह्मन्! अब इस व्रत की विधि कृपाकर के कहिये। तब दतात्तेय जी बोले:-

श्रृणु भार्गव वक्ष्यामि जानाम्यखिलागमम्।
मार्ग शीर्षस्याद्य तिथिं समारभ्य व्रतं चरेत्।।१।।
कात्यायन्याः पूर्णिमान्तं स्त्रीणामत्राधिकारितः।
स्नात्तवोषसि नदी तीरे शुक्ल वस्त्रादि भूषिता।।२।।
सैकती प्रतिमांकृत्त्वा कात्यायन्या यथा विधिः।
तत्रध्यात्त्वा प्रोक्तवत्तां शुक्ल माल्याक्षतादिभिः।।३।।
नवनीत प्रधानं वै नैवेद्यं विविधं भवेत्।
एवं सम्पूज्य संस्तुत्य नृत्यगीतैश्च तोषयेत्।।४।।

हे भार्गव परशुरामजी अब इसका विधान सुनिये। यह व्रत मार्ग शीर्ष कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ करके मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि पर्यन्त समाप्त करे। इस व्रत की अधिकारिणी स्त्रियां हैं इसलिये इन्हें इस व्रत

को धारण करना चाहिये। सूर्योदय से पूर्व नदी में स्नान करके शुद्ध एवं स्वच्छ वस्त्र धारण करके कात्यायनी देवी की यथाशक्य स्वर्ण किंवा सिक्ता वालुका की मूर्ति बनाकर, उसका यथोक्त विधि से पार्द्यार्ध्यादि द्वारा पूजन करके ध्यान करे, गव्य माखन पायस अपूयादि नैवेद्य निवेदन करे। इस प्रकार पूजन के अन्त में नृत्यगीत तथा स्तुतियों द्वारा कात्यायनी देवी को प्रसन्न करे। फिर पूजन-सांगता सिद्धयर्थ इन कुमारियों का स्मरण करें-

मालवी सहदेवा च-नन्दा भद्रा-सुनन्दिनी।
पद्मा विशाला गोदाम्नी श्री देवी देव मासिलवी॥५॥
श्यामा-सुपेशा-शालाङ्गी-मानवी मानदाऽमृता।
इतिगोप कुमारीणां प्रधानाः पोड़शेरिता॥६॥
पूजान्ते संस्मरेदेताः पूजा सम्पूर्तिहितवे।
एवं करोति या नित्यं तस्याः कार्यं सुसिध्यति॥७॥

इस प्रकार उपरोक्त श्लोकों द्वारा मालवी आदि सोलह प्रधान गोप कुमारिकाओं का स्मरण करे। तपश्चात् श्रीकृष्ण तथा भगवती को निम्नलिखित मन्त्रों से नमस्कार करे-

गोपी प्रिय नमस्तुभ्यं गोपाल गोब्रजेश्वर।
गोपी वस्त्रापहरण गो गोपालनिषेवित॥८॥
मातः कात्यायनि नमो नन्दगोप कुमारिके।
कंसवीर्यहरे कृष्णवीर्ये विध्यादिवासिनी॥९॥

इस प्रकार श्रीकृष्ण और कात्यायनी देवी को नमस्कार

कर सवत्सा गो को नमस्कार व परिक्रमा कर गौ को ग्रास देकर हविष्यान्न का भोजन करे। इस प्रकार इस नियम को मास पर्यन्त करके मास के अन्त में प्रथम कही हुई कात्यायनी शांति के अनुसार माहेश्वरी की विशेष पूजा हवनादि करके ब्राह्मण भोजन करावे। दत्तात्रेयजी कहते हैं।

एवं व्रताऽऽचरणतो वांछितं प्राप्यतेऽखिलम्।
कुमारी लभते श्रेष्ठं पतिं सर्व सुखा वहम्।।१०।।
तरुणी लभते पुत्रं पौत्रं पुत्रवती तथा।
सौभाग्यं सर्व सौख्यानि लभते नात्र संशयः।।११।।

इस प्रकार व्रत करने से सभी मनोरथ सिद्ध होते हैं। कन्या सुन्दर पति को प्राप्त करती है। तरुणी को पुत्र प्राप्त होता है। पुत्रवती को पौत्र प्राप्त होता है। इस व्रत से सुख सौभाग्य आदि सभी मनोरथ निश्चय सिद्ध होते हैं।

।। इति कथा-समाप्तम्।।

वाल्मीकिकृत सम्पूर्ण रामायण

रामायण आठों काण्ड सरल हिन्दी भाषा में सम्पूर्ण चित्रों तथा आरतियों सहित 448 पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य मात्र-100/-

महर्षि वेद व्यास कृत महाभारत

महाभारत अट्ठारह पर्वों को सरल हिन्दी भाषा दिया गया है। मंगाकर पढ़े। मूल्य 120/-

श्री शिव महापुराण भाषा

इस पुस्तक में सम्पूर्ण ग्यारह खण्डों का वर्णन चित्रों तथा आरितयों सहित किया गया है। 336 पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य 80/- रु0

श्री वेदव्यास कृत

श्रीमद् देवी भागवत् पुराण:महात्म्य, पाठ-विधि

सम्पादन-ज्वाला प्रसाद शास्त्री

अठारह पुराणों में देवी भागवत् पुराण श्रेष्ठ है। इस पुराण के पढ़ने तथा सुनने से सभी प्रकार के भयों-राजा, शत्रु, दुर्भिक्ष तथा भूत प्रेतादि से मुक्ति मिल जाती है। देवी के अराधक के लिए विश्व का कोई भी पदार्थ दुर्लभ नहीं रहता। अतः आत्म कल्याण के अभिलाषी मनुष्यों को 'श्रीमद् देवी भागवत् पुराण' का पाठ करना चाहिए। मूल्य- 100/- रुपये

श्रीमार्कण्डेय महापुराण सरल हिन्दी में मूल्य 100/-

श्री विष्णु पुराण सरल हिन्दी में मूल्य 100/-

शिव का वरदान रुद्राक्ष एवं रत्न परिचय

लेखक :श्री राजाराज गिरि जी

एक मुखी से चौदह मुखी तक रुद्राक्ष की पहचान, धारण करने की विधि, मंत्र, रत्नों की पहचान, राशि के अनुसार नग धारण करने की विधि स्फटिक महात्म्य सहित पूरी जानकारी। मूल्य 10/-रु

भारत दर्शन चारों धाम सप्तपुरी यात्रा मूल्य 50/-

सम्पूर्ण ग्रह नक्षत्रादि शान्ति रहस्य भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में गणपति पूजन के साथ नवग्रहों की शान्ति, नौ ग्रह पूजन, ग्रहों के मंत्र, ग्रहों के स्तोत्र, अष्ट योगिनी पूजन व मंत्र, शिव पार्थिव पूजन, महामृत्युंजय कवच, महामृत्युजंय जप के मंत्र, संतान गोपाल मंत्र, बाल रक्षा स्तोत्र, नाग पूजन। 27 नक्षत्रों के पूजन मंत्रके साथ गण्डमूल अभुक्तमूल नक्षत्र, मूल शान्ति प्रयोग, ज्चेष्ठा शान्ति प्रयोग, आश्लेषा शान्ति, कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति, त्रिकप्रसव शान्ति, ग्रहण जनन शांति, वास्तु विधान, गृह वास्तु पूजन, नृसिंह पूजन, गायत्री, जप के बाद की सचित्र आठ मुद्राएं, चौबीस गायत्री, शताक्षर गायत्री मंत्र के साथ पितृ तर्पण प्रयोग को विस्तृत ढंग से दिया गया है। यह पुस्तक सब लोगों के लिये उपयोगी है। मूल्य 40 रु0।

श्री गरुड पुराण (महर्षि वेदव्यास कृत)

मृत्य होने पर मनुष्य कहाँ जाता है, किस अवस्था में रहता है, आत्मा का अस्तित्व है या नहीं, परलोक में जीव का अवस्थान किस प्रकार रहता है, यह सभी जिज्ञासा आदिम युग से ही मानव को आन्दोलित करती रही है। इन सब प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भगवान वेद व्यास जी द्वारा दिया गया है। यही कारण है कि आज भी गरुड़ पुराण का पाठ मन की शान्ति के लिए किया जाता है। सरल हिन्दी बहुत मोटे अक्षरों में बड़ा। 125/-रु०

गरुड़ पुराण प्रेत कल्प (संस्कृत हिन्दी) 60/-रु०

नासकेतोपख्यान भा.टी. 40/- रु०

श्रीमद् भगवद् गीता असली पुरानी लाहौरी

लेखक-स्वामी किशोरदास श्री कृष्णदास कृत

यह पुरानी भगवद्गीता सम्पूर्ण 18 अध्याय, 18 माहात्म्य सहित सरल हिन्दी भाषा के मोटे अक्षरों में, बड़े साइज में तैयार की गई है। इसमें प्रत्येक अध्याय का चित्र तथा गीतासार भली-भाँति समझाया गया है। साथ ही इसमें आरतियाँ कमलनेत्र स्त्रोत, नागलीला, गर्भगीता, नित्यकर्म गीता, हनुमान चालीसा, हरिहर स्त्रेत, गायत्री मंत्र आदि कई पाठ सामग्री दी गई है। बड़े साइज की 400 पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य 120/-रु0 है।

कर्मसिंह अमरसिंह, बड़ा बाजार, हरिद्वार

फोन-01334-225619

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सम्पूर्ण हवन रहस्य भाषा टीका

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में पंचगव्य निर्माण, आचार्यवरण, रक्षा विधान, यज्ञकुण्ड पूजन, पंचभू संस्कार, अग्नि पूजन, हवन संकल्प, पंच वारुण होम, नवग्रह होम, अधिप्रत्याधि, पंचलोकपाल, दशदिक्पाल होम, वास्तु होम, सोडश स्तंभ होम, सर्वतोभद्र, लिंगतोभद्र, योगिनी, क्षेत्रपाल, विष्णुयाग (विष्णु सहस्त्रनाम), गायत्री याग (गायत्री सहस्त्रनाम), रुद्रयाग (रुद्रिपाठ सहित), दुर्गा याग (याग विधान), पुरुष सूक्त, रुद्रसूक्त, श्रीसूक्त, हवन तथा न्यास सहित, उत्तर पूजन, स्विष्ट कृद्धोम, बलिदान, पूर्णाहूति, आरती, तर्पण, मार्जन, गोदान, अभिषेक मंत्र तथा देवताओं के विसर्जन मंत्र सहित यज्ञकुण्ड निर्माण की विधि रंगीन भद्रमण्डल चक्र के साथ सुसज्जित पुस्तक प्रत्येक ब्राह्मण, साधक, ध ार्मिक मनुष्य के लिये परम उपयोगी है। इस पुस्तक को आज ही मंगाये।

मूल्य 50/-रु०

पितृकर्म समुच्चय-अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

मनुष्य की मृत्यु के वाद होने वाले अन्तिम संस्कार करने के लिये परम उपयोगी पुस्तक में मृत्यु समय करने योग्य कर्म पिण्ड दान, अस्थि संचय, दश गात्र तथा उनके संकल्प, एकादशाह के पिण्डदान, शैयादान, गोदान, अश्वत्थ पूजन, द्वादशाह के दिन पिण्डदान, शैयादान, मासिक कुंभ पिण्ड दान, गोदान, पितृ तर्पण, तीर्थ श्राद्ध आदि विषयों को दिया गया है। साधारण ब्राह्मण भी इस पुस्तक से सम्पूर्ण पितृकर्म कर सकता है।

मूल्य 40 रु०

वृहद नित्यकर्म पद्धति (सर्वदेव पूजा)

(लेखक- पं० ज्वाला प्रसाद शास्त्री)

इस पुस्तक में नित्यकर्म पूजा पाठ, नवग्रह पूजन, गायत्री जप विधि, 24 गायत्री मुद्राएँ, कवच, यजुवेदी सन्ध्यादि, देव ऋषि तर्पण विधिा, देवपूजा विधि, हवन, सभी पूजन विधि, आदित्य हृदय स्तोत्र पाठ, स्तुतियाँ, एकादशी नियम, सब देवताओं के पूजन हैं। मूल्य-35/-रुपये

एकादशी व्रत कथा मूल्य 25/-

कर्मसिंह अमर सिंह, बड़ा बाजार, हरिद्वार

सम्पूर्ण पूजन रहस्य भाषा टीका

-ले० शिव स्वरूप 'याज्ञिक'

इस पुस्तक में संध्या पाठ सभी देवी-देवताओं के पूजन, शांति पाठ, संकल्प मंत्र, स्वस्तिवाचन, कलश पूजन, नान्दी मुख श्राद्ध, षोडश मातृका पूजन, नवग्रह पूजन, यज्ञ निर्माण पूजन, विष्णु पूज़न, शिव पूजन, दुर्गा न्यास विधान पूजन, सर्वतोभद्र देवता स्थापना, अग्नि स्थापना, वारुणी हवन, रुद्र सूक्त, श्री सूक्त, गोदान आशीर्वाद मंत्र, महा मृत्युंजय जप पूजन, संकट नाशक गणेश स्त्रोत, नवनाग स्त्रोत, शनि स्त्रोत, श्रीराम स्तवन बहुत अच्छे ढंग से दी गयी है। प्रत्येक ब्राह्मण प्रत्येक व्यक्ति के घर मे रखने योग्य उपयोगी पुस्तक आज ही खरीदें। 40/-रु०

कर्मकाण्ड षोडश संस्कार रहस्य

लेखक- शिव स्वरूप यज्ञिक

इस पुस्तक में जीवन में होने वाले सोहल संस्कार-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, षष्ठि महोत्सव, नामकरण, निष्क्रमण, अन्न प्रासन, केशाधिवास, चूड़ाकर्म कर्णवेध, विद्यारम्भ, समावर्तन, वाग्दान, षोडश स्तंभ पूजन, विवाह संस्कार आदि को भली प्रकार लिखकर साथ में हिन्दी भाषा का भी प्रयोग कर पुस्तक साधारण विद्वान के लिए भी सरल बन गई है। पुस्तक में गणपत्यादि पंचाग देवताओं के पूजन के साथ संस्कार के मुहूर्तो का भी उल्लेख है। पूजन सामग्री भी हर संस्कार की पुस्तक में लिख दी है जिससे पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई। विद्यार्थियों, साधारण ब्राह्मणों के लिये तो यह पुस्तक बरदान स्वरूप है। अवश्य ही इस पुस्तक को पास रखने से साधारण विद्वान श्रेष्ठ विद्वान बन जाता है। इसलिए इस पुस्तक को अवश्य मंगाये। मूल्य 100/-रु०

शिवार्चन रहस्य (शिवपूजा पद्धति) मूल्य 25/-

कर्मसिंह अमर सिंह, बड़ा बाजार, हरिद्वार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh